अध्याय - 2

"पं. नरेंद्र शर्मा: जीवन तथा काव्ययात्रा"

अध्याय - 2

पं. नरेंद्र शर्मा: जीवन तथा काव्ययात्रा

'जहाँ न जाए रवि, वहा जाए कवि" इस उक्ति के अनुसार साहित्य, राजनीति, तथा फिल्म क्षेत्र में अपनी कर्मठ प्रतिभा तथा कल्पनाशील मनन के द्वारा साहित्य जगत् में शानदार परंपरा रखनेवाले पं. नरेंद्र शर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के बुलंद शहर जिले की खुर्जा तहसील में जहागीरपूर नामक ग्राम में 28 फरवरी 1913 को एक मध्यवर्गीय ब्राम्हण परिवार में हुआ। पिता पं. पूरनमल शर्मा जिन्होंने दो विवाह किए थे जिनमें से प्रथम पत्नी से तीन संताने हुअी तथा द्वितीय पत्नी गंगादेवी से नरेंद्रजी ही एकमात्र संतान हुयी।

पं. नरेंद्रजी का नामकरण उनके एक जीजा ने कर दिया जो साहित्यिक उपन्यासों के प्रेमी थे उन दिनों उपन्यासो में नरेंद्र नाम बहुत चलता था, उनके रुचि के किसी उपन्यास का नायक नरेंद्र रहा होगा इसप्रकार कवि का नामकरण उनके एक बहनोई ने किया था और सौभाग्य की बात यह कि नरेंद्र जी इसी नाम से प्रसिध्द भी हुए। नरेंद्रजीके केवल चार वर्ष की आयु मेंही उनके पिताजी उनके पिताजी का देहांत हो गया। परिवार संपन्न तथा संयुक्त होने के कारण उनके छोटे और बडे ताऊजी ने नरेंद्रजी का बडे लाड-प्यार से पालनपोषण किया जिससे उन्हें उनके पिताजी का अभाव महसूस नहीं होने दिया।

शिक्षा- दीक्षा

नरेंद्रजी की प्रारंभिक शिक्षा विचित्र ढंगसे ही हुई। किसी भी स्कूल में न जाकर उन्होंने किंडर गार्डन सेट के सहारे घर पर ही अक्षरज्ञान का प्रारंभ किया। इसके बाद उन्होने जो पुस्तक पढी वह थी 'बाल सत्यार्थ प्रकाश'। इसके बाद वे जहाँगीरपूर के प्राइमरी स्कूल में पढने लगे जहाँ से कक्षा चार तक शिक्षा प्राप्त की जहाँगीरपूर की शिक्षा समाप्त करने के उपरांत गाँव के किसी एक सज्जन से अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त किया। परिणाम स्वरुप उन्हें उसी

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR LIBRARY
KARVEER LIBRARY KOLHAPUR

वर्ष खुर्जा के जे.ए.एम. हाईस्कूल की पाँचवी कक्षामें प्रवेश मिल गया। खुर्जा के इस हाईस्कूल के प्रिंसीपल थे हिंदी के प्रसिध्द साहित्यकार श्री. जगदीशचंद्र माथूर के पिता श्री. लक्ष्मीनारायण माथुर जो एक शिक्षशास्त्री, विद्याव्यसनी तथा कुशल प्रशासक थे। उनके संपर्क में आ जाने से शर्मा जी के जीवन का सर्वांगीण विकास हो गया। विद्यार्थी जीवन से शर्माजी और जगदीशचंद्र माथुर साथ-साथ अध्ययन करते जिससे दोनों के मध्य मैत्रीभाव अंकुरित हुआ जिसका घनिष्ट रुप से शनैः शनैः विकास होता गया।

हिंदी साहित्य संम्मेलन प्रयाग की प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण करनेके उपरांत सन् 1929 में शर्मा जी ने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1931 में इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आगे अध्ययन करनेके लिए उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। वहाँ हिंदी के प्रसिध्द कवि. डॉ. हरिवंशराय बच्चन, श्री. सुमित्रानंदन पंत, श्री. सुर्यकांत त्रिपाठी, 'निराला' तथा श्री. भगवतीचरण वर्मा आदि के सपर्क में आने से उनका प्रोत्साहन तथा स्नेह मिला जिससे शर्माजी की काव्यप्रतिभा भी और अधिक चमकने लगी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शर्मा जी ने 1933 में बी.ए. किया और 1936 में प्रयाग विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य विषय में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

राजनीति के प्रति रुचि-

शर्माजी को बचपनसे ही आर्यसमाज के संस्कार प्राप्त हो गये थे और राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के प्रति श्रध्दा भी हो गई थी। शर्माजी जब शिक्षा ग्रहण कर रहें थें, उन दिनों में देश में आजादी की आग सुलग रही थी, इन्हीं दिनो नरेंद्रजी के घर साप्ताहिक समाचार पत्र 'प्रताप' आया करता था। जिसका बहुत बडा प्रभाव शर्माजी के मन पर पडा। उन्हें देशभक्ति का यह प्रेरक मत्र मिल गया।

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान हैं"
वह नर नहीं नर पशु निरा हैं, और मृतक समान हैं'।"।

इस मंत्रको माननेके फलस्वरुप एकबार बच्चों की टोली बनाकर हाथ में पैमायश की झंडी लेकर गांव के बाहर पुलिस चौकी को ललकार आये थे। सन् 1930 में लाहौर अधिवेशन में पहलीबार तिलकजी ने " स्वतंत्रता हमारा जन्मसिध्द अधिकार है" यह

नारा लगाया। इस नारेका प्रभाव शर्माजी के मनपर इतना पडा कि देश की स्वाधीनता के लिए उनके हृदय में उत्साह की प्रबल लहरें उमडने लगी।

एम.ए. करनेके उपरांत उन्होंने राजनीति में भाग लेना आरंभ किया। नरेंद्रजी नौजवान भारत सभा के सक्रिय और कर्मठ सदस्य थे तथा वे कुछ समय तक उसके प्रधानमंत्री भी बनें। सन् 1929-30 के बीच जब उत्तरप्रदेश के तत्कालीन गवर्नर सर माल्कम हेली बुलंद शहर आयें तो नरेंद्रजी के नेतृत्व में उनका डटकर विरोध किया गया। साहित्य और राजनीति दोनों ही क्षेत्रों में समान रुप से गति को रखनेवाले शर्माजी की नियुक्ति अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमेटी के केंद्रिय कार्यालय में हो गई और वे स्वराज्य भवन में काम करने लगें। कुछ दिनोंतक उन्होंने भारत साप्ताहिक के संपादकिय विभाग में भी काम किया।

फिल्मी गीतकार-

सुप्रसिध्द साहित्यकार श्री. भगवतीचरण वर्मा के प्रयत्न से नयी कर्मभूमियोंपर अपनी राह बनाने हेतु 1943 में शर्माजी फिल्मों में गीत लिखने के लिए बंबई आ गए। फिल्मी गीतकार के रुपमें उन्होने जो ख्याति कमायी वह तो अक्षुण्ण ही हैं। फिल्मक्षेत्र में उर्दूनिष्ठ गीतो की अपेक्षा हिंदी में गीतो की रचना करके उन्होंने निश्चय ही हिंदी की अपूर्व सेवा की हैं। हमारी बात, ज्वार भाटा, भाभी की चूडियॉं आदि फिल्मों के लिए लिखे गए गीत सर्वश्रेष्ठ बन गए हैं। शर्माजीद्वारा लिखा गया 'भाभी की चूडियॉं' फिल्म का 'ज्योति कलश छलके' और 'सत्यम् शिवम् सुदरम्' फिल्म का 'यशोमति मैया से बोले नंदलाल' गीत यादगार बन गया हैं। इतने सुदर, सरस साहित्यिक और कलात्मक गीत इस समय तक कम ही लिखे गए हैं।

पारिवारिक जीवन-

शर्माजी का पारिवारिक जीवन भी बडा सुखी संपन्न रहा हैं। सन् 1947 में श्री. सुमित्रानंदन पत की अभिभावकत्व में उनका विवाह बंबई में संपन्न हुआ। संयोग की बात यह की अपने किशोर जीवन में अपनी भावी पत्नी के प्रति जो कल्पना की थी उसके अनुसार वह सत्य साबित हो गयी। उनकी पत्नी का नाम सुशिला तथा वह गुजरात प्रदेश की थी। नरेद्र जी का वैवाहिक जीवन भी पूर्णरुपेण सफल रहा। शर्माजी के परिवार में उनकी धर्मपत्नी के अतिरिक्त तीन कन्याएँ तथा एक पुत्र हैं। उनका अपना नीजी का मकान बंबई के उपनगर खार मे हैं।

सन् 1953 से शर्माजी आकाशवाणी बंबई रेडियो स्टेशनपर सुगम संगीत तथा हिंदी कार्यक्रमों के नियोजक रहें। कुछ दिनोंतक विविध भारती के संचालक रहें। आकाशवाणी में कार्य करते समय भी वे साहित्य-साधना में संलग्न रहें और कुछ कविता खंडकाव्य तथा कथाकाव्य का सृजन किया। तन और मन दोनों दृष्टियोंसे कवि पदपर आरुढ होनेवाले शर्माजी अत्यंत सौम्य सरल एवं शांत प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। शर्माजी की ऑखों में एक ऐसा अनोखापन हैं, उनका व्यवहार कुछ ऐसा मधुर और सौजन्य से भरा हैं कि वह हरेक को अपना बना लेता है। कविसुलभ भावुकता और संकोचशीलता से तो उनका हृदय परिपूर्ण हैं।

पं. नरेंद्र शर्मा : काव्ययात्रा

कवि का व्यक्तित्व और कृतित्व परस्पर सापेक्ष होता हैं। किसी भी कविका काव्य अपने युग की तत्कालिन परिस्थितियों से अछूता नहीं रहता। युग की तत्कालीन परिस्थितियों, सामाजिक, वातावरण आदि के प्रति भी अपनी धारणाएँ, मान्यताएँ तथा आदर्श होते है जिनको कवि अपनी काव्यरचना का आधार बनाता है।

शर्माजी का काव्यरचना संबंधी दृष्टिकोण स्वान्तसुखाय हैं। अर्थात वे अपने हृदय को संतोष और सुख प्रदान करने के लिए काव्यरचना करते हैं। संक्षेप में हम फूलचंद जैन सारंग के शब्दोंमें कह सकते हैं"सच्चा कवि वही हैं जो संवेदनशील हैं सरस हैं। जैसे रसवती भूमि ही हरियाली दे सकती हैं, सौभाग्यवती नारियॉ ही जननी बन सकती हैं वैसे ही अनुभूतिशील भावुक कवि हृदय ही सच्चे और सरस काव्य का प्रतिपादन कर सकते हैं, कविता कोई व्यवसाय नहीं जिसे हर एक कर सकें।"2 उपर्युक्त कथन के आधारपर हम इतनाही कह सकते हैं कि शर्माजी का काव्य एक भावुक संवेदनशील हृदयसे उठी हुयी तरलतम तरंगे है-- खंडकाव्य, कथाकाव्य, गीतिकाव्य, कविता आदि काव्य के अनेक रुपोंको छूनेका प्रयास उन्होंने किया हैं। उनकी प्रत्येक कृतिकी रचनागत तथा विषयगत विशेषताओंको हम सिलसिलेवार देखेंगे।

पहली रचना 'ऑसू' का प्रकाशन -

कविवर सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा से प्रेरणा ग्रहणकर शर्माजी ने कविता लिखना आरंभ किया तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त करते ही वहॉ के साहित्यिक वातावरण में पलनेके कारण उनकी काव्यसृजन की प्रेरणा और प्रबल हो उठी। सन्

1932 में उनकी सबसे पहली रचना इलाहाबाद से प्रदर्शित होनेवाली चाँद पत्रिका में 'आँसू' शीर्षक से छपी। इसके बाद शर्माजी की दूसरी रचना 'सरस्वती' से प्रकाशित हुई।

---- शूलफूल एवं कर्णफूल और प्रभातफेरी ----

कवि की काव्य साधना का प्रारंभ गीतों की रचना से हुआ हैं इस दृष्टि से उनकी स्फुट कविताओं का पहला संकलन सन् 1934 में 'शूलफूल' नाम से दूसरा संग्रह 1936 में ' कर्णफूल' नामसे तथा तीसरा कविता संग्रह 1938 में 'प्रभातफेरी' नाम से प्रकाशित हुआ। शूलफूल एवं कर्णफूल इन दोनों कविता संग्रहों में एक भावूक किशोर हृदय की सुंदर और सरस अभिव्यक्तियाँ हैं इस संग्रहोंमें संकलिन कविताओं में प्रेम निवेदन संयोग, मधुरिमा, एवं विरहव्यथा के ही दर्शन होते हैं कविके इसी भावका दर्शन उनकी शूलफूल नामक कवितासंग्रह के मिलन कविता के निम्नलिखित पंक्तियोंमें होता हैं--

"बहुत दिनोंतक दूर रह लिए आओ अंक मिलन कर लें।
विरह व्यथा के दिन सुमिरन कर दृढतर अलिंगन भर लें।"3

शूलफूल एवं कर्णफूल के पश्चात 1938 में प्रकाशित 'प्रभातफेरी' काव्य संग्रहोंको नरेंद्रजी का पहला प्रतिनिधि कविता संग्रह कहा जाता हैं। इस काव्य संग्रह के बारे में स्वयं नरेंद्रजीने 'आधुनिक कवि भाग 9' की अपनी बात में स्पष्ट किया हैं कि जब दोनों संग्रहों के प्रथम संस्करण की सब प्रतियाँ बिक गई, मैंने उनकी कुछ कविताएँ चुनकर और कुछ नई कविताएँ जोडकर 'प्रभातफेरी' काव्यसंग्रह को प्रकाशित किया।

'प्रभातफेरी' काव्यसंग्रह में बहत्तर (72) कविताएँ संकलित हैं। ये सभी कविताएँ गीतिकाव्य की कोटि में आती हैं। इस संग्रह के गीतों में मुख्यतया किशोर मनका आकुल भावावेश ही अभिव्यक्त हुआ हैं। इस संग्रहोंमें संकलित कविताओं में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ प्रमुखरुपसे दिखाई देती हैं-- 1) समाजसुधार 2) असंतोष एवं विद्रोह 3) अध्यात्मिकता 4) प्रकृति तथा 5) प्रेम यही प्रवृत्तियाँ आगे चलकर नरेंद्रजी के काव्यकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ बन गई। खासकर 'प्रभातफेरी' की कविताओं में कविने राष्ट्रीय तथा यथार्थवादी स्वरको व्यक्त करके सामाजिक रुढियों पर निष्ठुरता के साथ कुठाराघात करते हुए उक्त रुढियों के शिकार किसानों, भिखारियों तथा कंगालों के प्रति सहानुभूति प्रकट की हैं। 'प्रभातफेरी' काव्यसंग्रह में संकलित कविता के निम्न उदाहरण से उनका यह भाव स्पष्ट रुपसे लक्षित होता हैं।

" बहुत बज चुकी जर्जर वीणा, बहुत प्रेमका गान हुआ'
बहुत हो चुका रासरंग, कवि बहुत दिनों मधुपान हुआ
वे सब स्पपने की बातें थी, जरा सत्य को अपनाओ
बहुत दिनोंतक हुआ न्याय का, और बहुत अपमान हुआ।
यहाँ बिलखाते लाल देख लो, और निरक्षक युवक कुमार
वंचित व्यथित युवतियाँ देखो, कुम्हलाती कलियाँ सुकुमार।
जग को जो भोजन देते हो, आज उन्हें भूखा देखो।
और दूसरी ओर देख लो धन, मद, गौरव मद, व्यभिचार। 4

समाज में स्थित इसतरह के लोगोंकी अवस्था को देखकर कवि विद्रोह करनेके लिए तैयार हो उठता है, लेकिन कविका यह विद्रोह स्थायी नहीं रहता। स्वाभाविक ही वह छायावादी कवियों के समान पलायन वृत्ति का आश्रय लेकर आध्यात्मिक जगत् में प्रवेश करता हैं इसके उपरांत कवि को प्रकृतिका विशद वैभव दृष्टिगोचर होता हैं, स्वाभाविक ही प्रकृति के कण-कण में अपनी ही सत्ता का कविको आभास होता हैं। नरेंद्रजीका छायावादी रुझान के प्रति आकर्षण होने के कारण उन्होंने 'प्रभातफेरी' में प्राकृतिक दृश्योंका वर्णन अत्यंत मनोहरता से किया है तथा प्रकृति को उन्होंने प्रेरणादायी भी माना हैं। कविने टॉडा? के जलप्रपात को देखकर लिखी गयी कविता 'शैलकुमारी' में कविने झरने की बातें करते करते जीवन की बातें की हैं उदा. --

" सिखाता है जीवन
पतन में भर प्रयत्न मानव
दुख में कर सुख का आव्हान
हमारी भूलों में है ज्ञान
सीखाने में सम्मान
पराजय से भय क्यों मानव
पराजय में हे विजय निदान
मृत्यु में है नवजीवन दान।
अश्रु में आशा की मुसकान।" 5

सामान्य तौरपर देखा जाए तो 'प्रभातफेरी' में कविने प्रेमी एवं प्रेमिका दोनोंकी

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

यौवन सुलभ भावनाओं की अभिव्यक्ति की हैं। यद्यपि उनकी कविताओं के भाव में अलौकिकता भी झलक उठती हैं लेकिन प्रभातफेरी की कविताओं में अंकित प्रेम लौकिक धरातल का ही हैं।

----प्रवासी के गीत----

सन् 1939 में लिखित 'प्रवासी के गीत' कवि की अत्यंत महत्वपूर्ण रचना हैं। इस कविता संग्रह में 53 गीत संग्रहित हैं और इसका मुख्य विषय लौकिक प्रेम हैं। एक युवक अपनी प्रेमिका से बिछुडकर परदेस चला जाता हैं और उसके विरहमें जो गीत उसके हृदयसे उमड पडते हैं, उसी भाव को ही कविने अपनी कविता का विषय बनाया हैं। वास्तव में देखा जाय तो आलेचक इस काव्य संग्रह को विरह काव्य ही मानते है जिसतरह महाकवि कालिदास का यक्ष भी प्रवासी था उसी तरह कृतिका रचयिता भीा प्रवासी ही हैं। प्रेम में मिली असफलता के बारे मे कविका कथन हैं-" जीवन के सत्य को काल नहीं खा सकता। व्यक्ति मिटेगा किन्तु समाज रहेगा। प्रकाश सदैव के लिए अंधकार का ग्रास नहीं बन सकता-- युग बदलेगा, यूगधर्म बदलेगा और कवियों का स्वर भी अधिक स्वस्थ होगा।"6 फलस्वरुप इसमे अनुभूति की तीव्रता, कल्पना की अधिकता तथा प्रतिकात्मकता को देखा जा सकता हैं।

----'पलाशवन'----

पलाशवन नरेंद्रजी का पाँचवा कविता संग्रह हैं जो सन् 1940 में लिखा हैं। इस संग्रह में 43 गीत हैं जिसका विषय प्रकृति प्रेम ही हैं परंतु कवि का ध्यान कर्मसंदेश , नियति , सांस्कृतिक परिवेश तथा यथार्थवादी सामाजिक चेतना आदि की ओर भी गया हैं। इस संग्रह की कविता फागुन की रात आधी मे कविने समाज के यथार्थ की विभिषिका का चित्र निम्नांकित पक्तियों मे चित्रित किया हैं--

"है रंभा रही बछडे में , बिछुडी एक गाय,
थन भारी है, दुखते भी हैं।
आता गजतेरी साँड भटकता सडकोंपर चलता मठार,
क्या वही दर्द उसके भी हैं?
जा रही किसके घर के जूठे बरतन मलकर
बदचलन कहारी थकी हुई
चौका-बासन सैना- बैनीमें बीना चुकी यौवन के दिन
काटनी उसे पर उमर अभी तो पकी हुई।"7

कविने इस संग्रह में संकलित कविताओंमें रुदन टीस, कसक, छटपटाहट, नैराश्य आदि भावोंको प्रकट किये हैं। वे भाव वहाँ इतने प्रगाढ नहीं है क्योंकि कविने साहस करकें बाहयजगत् को देखकर स्फूर्ति तथा नवउल्लास को प्राप्त किया हैं। कवि ने आत्मविश्लेषण कर अपनी वास्तविक स्थिति को समझाने का प्रयास किया हैं, जिससे उसकी व्यथा अस्थिरता एवं उदासी निस्संदेह पहलेसे कम हो गयी है। प्रवासी के गीत की भाँति कवि सिर्फ वेदना में निमग्न न रहकर उससे उपर उठनेका प्रयास भी करता हैं। इस दृष्टिसे डॉ रामदरश मिश्र का यह कथन इस संग्रह के बारेमें सत्य साबित होता है। कविता इस कविता संग्रह में संकलित गीतोंको विषय की दृष्टिसे दो भागोंमें विभाजित किया हैं। ।) विशुध्द लौकिक धरातल पर आधारित गीत और 2) स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर उन्मुख होनेवाले भावना के गीत। इस कवितासंग्रह में सर्वत्र प्रवासी के विरह की छाया मँडराती है। कविने भावप्रवणता तथा यौवन की आकांक्षाओं से उद्वेलित हुए गीतोंकोही संकलित किया है उदा. इस संग्रह की प्रथम कविता "साँझ होते ही न जाने छा गई कैसी उदासी" की निम्नलिखित पंक्तियाँ--

साँझ होते ही न जाने छा गई कैसी उदासी
क्या किसी की याद आई ओ विरह व्याकुल प्रवासी।
अस्त रवि सी हो गई क्या श्रांत म्लान विलुप्त आशा
क्या अभी से सोच कल की, ली बसा मनमें निराशा
पड गयी बुझते दिवस की भग्न उरपर म्लान छाया।
गेह जाने देख पक्षी या कही विश्राम भाया।"8

कविने इस संग्रहमें संकलित कई गीतोद्वारा प्रेम का आदर्श एवं उदात्त रुप प्रस्तुत करके विरह को उन्होंने एक प्रकारकी साधना मानी हैं। इसलिए वह अपना सर्वस्व समर्पण करता हैं, क्योंकि उसके मनमें यह दृढ आशा है कि उसकी प्रेयसी की भेंट इस जन्म में न सही तो अन्य जन्म में अवश्य होगी। इसप्रकार इन गीतोंद्वारा प्रेम का यह सिध्दांत "जो समय का बंधन स्वीकार नहीं करता और अपनी प्रेयसी को जानना चाहता हैं" को स्पष्ट करनेका प्रयास किया हैं।

इसप्रकार शर्माजी ने 'प्रवासी के गीत' काव्य संग्रह में लौकिक एवं आदर्श एवं सात्विक प्रेमकी अभिव्यक्ति की हैा। कविने निराशा, अवसाद करुणा एव विवशता आदि भावोंको प्रकट करने का भरसक प्रयास किया हैं। छायावादी, स्वच्छंदतावादी दृष्टिकोण सामने

रखकर कविने इन गीतोंकी रचना की हैं। पलाशवन" कविताओं के स्वर में वैविध्य, खुलापन और प्रसन्नता हैं। इसमें सौंदर्य के अनेक रुपरंग उभरे हैं।

इसप्रकार पलाशवन में मिलन से संबंधित कोई कविता दिखाई नहीं देती और विरह भी क्षयोन्मुख नहीं रह जाता। कवि वियोग में मधुर एवं सुकुमार कल्पना करता हैं। "पलाशवन" में प्राकृतिक दृश्योंका वर्णन अत्यंत तन्मयता के साथ किया हैं तथा प्रकृति के रम्य एवं भयानक चित्रोंका वर्णन इस संग्रह की विशिष्टता हैं। प्रकृति के स्वरुप का चित्रण करते-करते कवि दार्शनिक हो जाता हैं और हृदयसे भावुक कवि बुध्दिसे चिंतक और विचारक बन जाता हैं।

----कामिनी----

शर्माजी ने 'कामिनी' खंडकाव्य की रचना सन् 1940 में देवली कैंप जेल में की। यह एक छोटी-सी प्रेम कहानी हैं जिसमें कामिनी और अतिथि के मिलन एवं पुनर्मिलन की कथा का चित्रण अतिथि, फूल और पत्र, निशिवासर तथा वासरमास नामक चार अध्यायों में की हैं।

'कामिनी' काव्य कृति की कथा नायक एवं नायिका की मिलनावस्था से आरंभ होती हैं। प्रकृति के वातावरण में स्थित कामिनी की कुटिया में एक अतिथि के सदृश्य कुछ समय के लिए रह जाता हैं और बाद में वन वन शांति की खोज में भटकता हैं। प्रारंभ में कामिनी और अतिथि का प्रेम वासनापरक ही है। फिर भी अपने प्रिय के भुजबंधन में बंधी कामिनी अनायास ही पूछती हैं "क्या आप मुझे छोडकर अन्यत्र नहीं चले जाएँगे न"। उसपर अतिथि उत्तर देता हैं प्रेमियों को बांधने के लिए भुजापाश के सदृश्य अन्य कोई बंधन और चुंबन की भाँति कोई अन्य सच्चा वचन नहीं हैं। लेकिन बड़े दृढतासे वचन देनेवाला अतिथि रात के समय कामिनी को गहरी नींद में देखकर सुनसान वन में छोडकर चला जाता हैं।

अतिथि उससे दूर भटक जाता हैं फिर भी उसे कामिनी की मधुर स्मृति व्याकुल कर रही थी, इसलिए वह जंगल में मारा-मारा फिरता हैं। उदा--

"शाप है, मैं नित्य खोजूँ और भूलूँ गेह।
शाप है मैं जलूँ जितना और पाँऊ स्नेह।"9

भटकते भटकते उसे पुनर्मिलन की आशा की एक किरण दिखाई देती हैं वह हैं - पुत्र की प्राप्ति। वह जानता है कि दो तत्व मिलकर यदि तीसरे तत्व को स्थान न दे

सके तो उनका मिलन व्यर्थ हैं इसीलिए प्रेयसी की अपेक्षा माँ का स्थान अधिक उच्च हैं। अतिथि इस आशय का पत्र कामिनी को लिखता हैं, जिसे पढकर वह विरह के गीत गाती हुयी मिलन की बाट जोहती हैं। उसी विरह ज्वाला में अपने शरीर को कमजोर करते-करते दस महिने की अवधि समाप्त होनेपर वह पुत्रवती हो जाती हैं। अतिथि का शाप समाप्त हो जाता हैं तथा दोनों का मिलन हो जाता हैं।

कामिनी एक उद्देश्यप्रधान कृति है, और शर्मा जी ने इसमें प्रेमका आदर्श एवं उदात्तरुप अभिव्यक्त करते हुए यह स्पष्ट किया है कि वासना मूलक प्रेम कभी श्रेयस्कर नहीं होता। केवल ऐन्द्रिक तृप्ति को ही प्रेम समझने के कारण 'कामिनी' काव्यकृति का नायक अतिथि नियतिद्वारा शापित होकर पूर्णता की खोज में भटकता रहता हैं। विरहाग्नि में नायक नायिका के कलुष भस्म हो जाते हैं और पुत्रप्राप्ति द्वारा प्रेम भी पूर्णता प्राप्त करता हैं। इसप्रकार 'कामिनी'खंडकाव्य के द्वारा शर्माजीने यह संदेश दिया है कि नारी के संसर्ग से पुरुष खंडित व्यक्तित्व अखंड और पूर्ण होता है तथा दोनों का मिलन सृष्टि के विकास का कारण हैं। प्रेमी और प्रेमिका के मिलन का परिणाम संतान प्राप्ति ही हैं। और यही फल मानव जीवन को गतिशील भी करता हैं। इसके विपरीत जब तक स्त्री पुरुष केवल वासना और ऐंद्रिय तृप्ति को ही प्रेम का अतिम फल मानते हैं, जब तक प्रेम पूर्णत्व प्राप्ति नहीं कर पाता।

----मिट्टी और फूल----

मिट्टी और फूल नरेंद्र जी की सातवी काव्यकृति हैं, जिसका प्रकाशन सन् 1943 मे हुआ। इस संग्रह में सत्तर कविताएँ संग्रहित हैं और इसका नामकरण भी इसमें संग्रहित प्रथम कविता 'मिट्टी और फूल' के आधारपर किया हैं। इस कविता में एक फूल के आधारपर किया हैं, इस कविता में एक फूल के जीवन का चित्रण किया हैं, जो मिट्टी में जन्म लेता हैं, पर उसे भूलकर वह मुक्त आकाश मे विचरण करनेके स्वप्न देखने लगता हैं और अंतमें उसके सभी स्वप्न नष्ट हो जाते हैं तथा उसे धूल में ही अपना अस्तित्व खोना पडता हैं। उदा. --

"आ गिरा धरा पर फूल, मिला मिट्टी में,
छिन्न में हुआ धूल!
"जिस मिट्टी से जीवन पाया था,
उस मिट्टी को गया भूल।"10

इसप्रकार कवि ने इस कविता द्वारा यह तथ्य प्रतिपादित करनेकी कोशिश की हैं कि यथार्थ कल्पना से अधिक वास्तविक होता है, और इसी यथार्थ का विकास कवि के मन में होने के कारण कवि अपनी व्यक्तिपरक भावनाको त्यागकर समष्टिपरक भावना को महत्व देता रहता है। फिर भी कवि भाग्यवादी होने के कारण अपने दुःखोंका कारण भाग्य को ही समझता है। और फिर यह भी सोचता हैं कि जब भाग्य ने दुःख दिया हैं तो सुख भी देगा इसी विश्वास के कारण वह अपने मनको टूटने नहीं देता। इसप्रकार इस कविता संग्रह की कविताओ में कवि संघर्ष के लिए प्रेरणा देता हैं तथा वह अपने मन में निराशा नहीं रखता।

अन्य काव्य कृति के समान इस संग्रह में भी प्रेमसंबंधी कविताएँ हैं। लेकिन यहाँ आकर कविका नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण परिवर्तित हो गया हैं। उसे फूल, तितली, और प्रेयसी न समझकर उसमें एक उदात्त रुप को देखता हैं। यहाँ आकर कवि को प्रकृति में भी परिवर्तन दिख पडता हैं, और डूबता सूरज उसे डूबते युग-सा प्रतित होता हैं।

वास्तवता से देखा जाय तो कवि ने 'मिट्टी और फूल' में अपने अंतः संघर्ष को प्रधानता दी हैं। देश और विदेश की भीषण हलचल ने कवि को विशेष रुप से प्रभावपूर्ण बना दिया हैं। इस संग्रह में संकलित कवि के बदलते हुए भाव तथा विचारोंको देखकर आलोंचकों ने उन्हें प्रगतिवादी कविके पंक्ति में बिठाने की कोशिश की हैं, लेकिन नरेंद्र जी इसे स्वीकारने के लिए बिलकुल तैयार नहीं। इसप्रकार शर्मा जी की काव्य चेतना युग को प्रभावित तथा विकासोंन्मुखी जान पडती हैं।

----हंसमाला----

सन् 1946 में नरेंद्र जी की काव्यकृति हंसमाला प्रकाशित हुई। इसमें इक्यावन कविताएँ संग्रहित है। श्री. विश्वम्बर 'मानव' ने इस संग्रह को प्रतिकात्मक संग्रह माना है। हंस को सत्य का प्रतिक मानते हुए हंसमाला की कविताओं को सत्य के अन्वेषण की कविताएँ कही हैं। इस संग्रह की कविताओं में कविका व्यापक दृष्टिकोण स्पष्ट हुआ हैं और कवि एक समन्वयवादी दार्शनिक और चिंतनशील व्यक्तित्व के रुप में हमारे समक्ष आते हैं। विचारक इसी कारण इस कृत्ति को चिंतनप्रधान कृति मानतें हैं। कवि का व्यापक विश्वप्रेम इसमें प्रकट हुआ हैं, जिससे उन्होंने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों को स्थान दिया हैं।

'हंसमाला' में संग्रहित कविताओं को पढनेपर यह ज्ञान होता है कि कविने

राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओंको छूने का प्रयास किया हैं। हिंदु-मुसलमान से संबंधित सांप्रदायिक विद्वेष, बंगाल का अकाल, विश्व का चार खंडोंमें विभाजन तथा डूबती हुयी मानवता को स्पष्ट किया हैं तथा पराधिन देश को स्वाधीनता के लिए प्रेरित करने हेतु सुभाषचंद्र बोस जी के जयहिंद नारे के महत्वको प्रकट किया हैं तथा कवि समस्त पराधिन देशों कों स्वाधीनता के लिए प्रेरित कर रहा हैं।-

"भारत भू का सांस्कृतिक वत्स-यवद्विप-दुंदुभि बजा रहा--
जागो दासों के महाद्वीप। अब जगी मुक्ति की महातृषा।"।0

इस संग्रह की कुछ कविताओं में कविने विरहव्यथा का चित्रण भी किया हैं तथा कुछ कविताओं में अपने जीवन संबंधी विचार भी प्रकट किये हैं। इस प्रकार हसमाला कविता संग्रह में संकलित कविताओंमें कवि व्यक्ति एवं समाजगत जीवन से समान रुपसे प्रभावित और संबंधित हैं।

----रक्तचंदन----

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निधन से दु:खी होकर शर्माजी ने सन् 1948 में 'रक्तचंदन' कवितासंग्रह का सृजन किया इस संग्रह में 45 कविताएँ संग्रहित हैं और इसमें गांधीजी का व्यक्तित्व उनके सत्य, अहिंसा आदि के बारे में सिध्दांत तथा उनकी निर्मम हत्या आदि बातोंका वर्णन इसमें हुआ हैं। गांधीजी के गुणोंका वर्णन करते हुए कविने स्पष्ट किया है कि जो मानवता के लिए जन्में जीवित रहें और मरें तथा मानवता को जीवित रखने हेतु उन्होने स्वंय मृत्यु का वरण किया और मानव जीवन की ज्योति शिखा बनें। महात्मा गांधी के गुणोंका बखान करनेके साथ ही कविने उनकी तुलना बॅ. जिनाके साथ की हैं। गांधीजी को कवि ने सत्याग्रह समर्पण तथा विश्वकल्याणवाद का प्रतिक माना हैं और जीना को उन्माद, क्रांतिवाद एव दुराग्रह का प्रतिक मान लिया हैं। - बापू के व्यक्तित्व में युग युगों के महापुरुषों की महानता पूंजीभूत हो गई थी। वे कबीर की वाणी, तुलसी की काव्यसृष्टि, अकबर के तंत्र तथा तिलक के स्वराज्य मत्रकी समन्वित प्रतिमा थें।

"वाणी ओजस्वमयी वीर कवि कबीर की,
काव्य सृष्टि तुलसी की सुरसरि के नीर सी
अकबर का तंत्र, लोकमान्य का स्वराज्य मंत्र
परिणति की प्रतिमा यह नंगा फकीर था।"।।

कवि गांधीजी की हत्या को विश्वइतिहास में एक रोमांचकारी घटना मानते हुए भगवान से प्रार्थना करता हैं, कि वे नवभारत को क्षमा कर दें जिस भूमिपर उस महामानव की पवित्र देह रक्तस्नात होकर चली। इसलिए उन्होंने गांधीजी के रक्त को चंदन माना जो भारतमाता के चरणों में चढाया। इसतरह इस कविता संग्रह की कविताओं में महात्मा गांधी का ही गुणगान किया हैं।

----अग्निशस्य----

फिल्म व्यवसाय में संलग्न होते हुए भी काव्य सृजन से जरा भी विमुख न होकर शर्माजी ने सन् 1950 में अग्निशस्त्र कविता संग्रह का सृजन किया। इस संग्रह में 60 कविताएँ संग्रहित हैं और कविताओं मे चिंतन की प्रधानता दिखाई देती हैं। इसी समयतक नरेंद्रजी की काव्यप्रतिभा पूरीतरहसे व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रसर हो चुकी थी। इस कविता संग्रह की कविताओंके प्रमुख विषय आध्यात्मिकता, पौराणिकता, नियति, प्रेम, प्रकृति, नारी, राष्ट्रीयता एवं लोकमंगल की भावना आदि रही हैं। सत्यही कविका दार्शनिक दृष्टिकोण भी 'अग्निशस्य की कई कविताओं में अभिव्यक्त हुआ हैं। उसीतरह कविने नारी जाति के प्रति संवेदना भी प्रकट की हैं, जो युगोंसे पुरुषोंके हाथ का खिलौना बनकर वह गयी थी। वह अब युग की चैतन्यमय लपट बन गयी। 'अग्निशस्य' की कई कविताओं में कवि का प्रकृतिप्रेम भी प्रकट हुआ हैं इसप्रकार 'अग्निशस्य' की कविताओं के बारे में हम इतना कह सकते हैं कि कविने मानवतावाद को अपना साध्य मानकर समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाया हैं।

----कदलीवन----

अग्निशस्य के उपरांत सन् 1953 में शर्माजीने अपना कविता संग्रह 'कदलीवन' का सृजन किया इसमें सत्तर (70) कविताएँ संकलित हैं। इसकी आधारभूमि मूलतः आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ही हैं। यहाँ भी कवि ने प्रकृति के प्रति अपना तीव्र अनुराग प्रकट करते करते किसी न किसी आध्यात्मिक या दार्शनिक भावभूमि को स्पष्ट किया हैं। उदा---

"रुपक, ताल, विलम्बित लय में कोई अंबर में गाता हैं।
मनहर मंगल गान।"।2

इस संग्रह में संकलित अधिकांश कविताओं में रहस्यानुभूति के दर्शन होते हैं

तथा कवि को प्रकृति कें कण-कण में विराट सत्ता का आभास होता हैं।

जगत् की नश्वरता तथा मनुष्य के क्षणभंगुर जीवन पर विचार करते समय कवि नें यह स्पष्ट किया हैं कि जीवन एक कच्चे धागे के समान है। वह जबतक टूटता नहीं तभीतक चमत्कार हैं, लेकिन प्राणरुपी पखेरु की उडान तो निश्चित हैं। साथ ही इस संग्रह में कवि ने नियतिवादी विचार भी स्पष्ट कियें है, जिसके अनुसार वह कर्ममहत्ता पर बल देता हैं। शर्माजी का विचार हैं कि मनुष्यने अपनी अस्तित्व की रक्षा करने के लिए मर्यादा को आवश्यक माना हैं। इसप्रकार कदलीवन की कुछ कविताओं में कविने जीवन, मरण, जगती के ताप परिवर्तनशील संसार आदि विषयोंका वर्णन किया हैं।

----द्रौपदी----

सन् 1960 में श्री. नरेंद्र शर्मा ने 'महाभारत' आख्यान को लेकर 'द्रौपदी' खंडकाव्य की सृष्टि की इस काव्य में कवि ने द्रौपदी के चरित्र को लेकर नारी जाति के प्रति बडे श्रध्दा और गौरव से भरे भावोंकी अभिव्यक्ति की गई हैं। महाभारत की विशाल कथाभूमि पर ज्योतिशिखा जैसी जलती 'द्रौपदी' के जीवन वृत्त को केंद्र बनाकर काव्य का सृजन किया हैं। परंतु कविने महाभारत कथा में मौलिक पुनरुद्भावन किया हैं। कविने महाभारत के पात्रोंको प्रतीकात्मक रुप में प्रस्तुत करते हुए मानव जीवन के शाश्वत मूल्योंको उठानेका प्रयत्न किया हैं। कविने द्रौपदी को जीवनीशक्ति का प्रतीक माना हैं तथा पाँचों पांडवों को पाँच महातत्वोंका प्रतीक माना हैं। उदा.--

"द्रौपदी जीवनीशक्ति सौंप दी पाँच तत्वोंको"

या कहा नियति ने पार्थ! करो अब

प्राप्त लुप्त तत्वोंको।"।3

द्रौपदी खंडकाव्य में कविने युधिष्ठिर आकाशतत्व, भीम प्राणतत्व, अर्जुन अग्नितत्व, नकुल जलतत्व, और सहदेव भूमितत्व हैं पृथा माना स्वयं पृथ्वीमाना के प्रतीक रुप में चित्रित किया हैं।

कविने प्रतीकात्मक रुप में महाभारत की महान कथारुपी सागर से अंजलि भर जल लेकर 'द्रौपदी' खंडकाव्य का सृजन किया । उन्होंने यह स्पष्ट किया कि नारी के बलिदान के बिना पुरुष को भला कुछ भी प्राप्त नहीं होता। धर्मराज ,युधिष्ठिर विजय को संभव बनाने के लिए कुंतीने अवैध पुत्र कर्ण की बल दी। द्रौपदी ने अपने पाँच पुत्रोंका बलिदान दिया।

इसतरह शर्माजी ने इस खंडकाव्य के द्वारा यह साबित करने का प्रयास किया हैं कि नारी के की सहनशक्ति में विजयश्री वास करती हैं। जैसे--

"दहनशक्ति से मूल्य चुकाती, नारी नर की जय का।
हैं नारी की सहनशक्ति में, संचित केतु विजय का।"।4

पांडवोंपर कौरव पक्षके लोगों ने अत्याचार किया फिर भी पांडव मौन रहें लेकिन अंत में दैवी (पांडव) और आसुरी (कौरव) शक्तियों का अठारह दिनोंतक युध्द होता हैं ओर इसमें दैवी पक्ष अर्थात पांडव पक्ष की विजय होती हैं। इसतरह द्रौपदी खंडकाव्य में कविनें आध्यात्मिकता का रस लेकर नूतन विचारोंको प्रकट किया हैं।

----'उत्तरजय'----

शर्माजीने 'उत्तरजय' प्रबंधकाव्य की रचना सन् 1965 में की। कविने इस काव्य को गाथाकाव्य कहा हैं लेकिन आलोंचकों ने उसे खंडकाव्य ही माना हैं। इस खंडकाव्य में कविने महाभारत के चिरपरिचित आख्यान के आधार पर कथानक का सृजन किया हैं। इसमें महाभारत युध्द के पश्चात युधिष्ठिर के राजधर्म पालन के प्रसंग को उठाया हैं। फिर भी कविने अपनी प्रतिभाशक्ति के सहारे मूल कथानक में थोडासा परिवर्तन करके कुछ मौलीक उद्भावनाओंको निर्माण किया हैं। महाभारत की पौराणिक कथा को दुहराना कवि का कोई उद्देश्य नहीं तो महाभारत की कथा के माध्यमसे कविने अपने विचारदर्शन को प्रस्तुत करनेका भरसक प्रयास किया है। कवि ने इस खंडकाव्य के माध्यम सें यह उपदेश देने का प्रयास किया हैं कि मनुष्य ने इस संसार के सघर्ष को न घबडाकर फ़ल की इच्छा को मनमें न धरते हुए निष्काम कर्म का आदर्श लेकर सांसारिक दु:खोंसे जुझकर कर्तव्य का पालन करना चाहिए। यह महान संदेश कविने 'उत्तरजय' खंडकाव्य का नायक युधिष्ठिर के माध्यमसे दिया हैं। जैसे--

"जाओ हे धर्मराज अम्बर की गहो बाँह।
हिमपर पदचिन्ह रहें धरतीपर रहें छाँह।"।5

जिसतरह आधुनिक कालमें चरित्रप्रधान खंडकाव्योंकी निर्मिती होती रही हैं। उसी के अनुरुप उत्तरजय भी चरित्रप्रधान खंडकाव्य की कोटि में आता है। महाभारत युध्द के पश्चात कितने नगर, ग्राम, देश, उजडे तथा जनसमाज की क्या दशा हुई? कवि को इन बातोंसे कोई प्रयोजन नहीं। कविका उद्देश्य महाभारत युध्द के पश्चात युधिष्ठिर के मतकी क्या दशा

हुई इस बात को लेकर कवि ने अपने खंडकाव्य की भावभूमि तैयार की है। द्रौपदी खंडकाव्य की भाँति 'उत्तरजय' में भी प्रतिकात्मकता को कविने महत्वपूर्ण माना हैं।

----'बहुत रात गए'----

उत्तरजय के दो वर्ष पश्चात सन् 1967 में कविने 'बहुत रात गए' कविता संग्रह का प्रकाशन किया इसमें शर्माजी की 61 कविताएँ संकलित हैं। इस संग्रह में संकलित कविताएँ कविने तीन सालों में लिखी हुई कविताएँ हैं। कवि ने इन तीन सालोंमें लिखी हुई व्यक्तिगत परिस्थितियों में जो सहा उसे कहनेका प्रयास किया हैं। इस संग्रह की कविताओंमें कविने व्यष्टि, समष्टिगत स्वानुभव को ही अपने रचना का स्त्रोत और बनाया हैं कविने अपनी काव्यचेतना के प्रौढ एवं महत्वपूर्ण सोपानपर लिखने के कारण इस कविताओंमें विषय वैविध्यता के दर्शन होते है। आध्यात्मिकता, पौराणिकता, नियति, प्रणय,-प्रकृति, नारी सामाजिक चेतना, राष्ट्रीयता एवं लोकमंगल की भावना आदिका इस संग्रहमें संकलित कविताओंमें दर्शन होता हैं। भाव एवं कला का सहज समन्वय इस काव्यकृति की सर्वाधिक विशेषता हैं।

----सुवर्णा----

सन् 1970 में प्रकाशित 'सुवर्णा' एक प्रबंधकाव्य हैं और कविने इसमें महाभारत की कथाका आधार लिया हैं। 'सुवर्णा' खंडकाव्य की नायिका सुवर्णा का वर्णन महाभारत की मूल कथा में नहीं हैं इस काव्य की जननी कवि-कल्पना हैं। शर्माजी ने अपने एक तमिलभाषी मित्र से एक लोककथा सुनी थी जिसमें संगम नाम की राजकन्या को विजय के दौरान कर्ण उसे लेकर आता हैं। परंतु सुतपुत्र कर्ण को स्वीकारने से उन्होंने नकार दिया। महाभारत के युध्द में कर्णका जब देहांत हो जाता हैं, तब उसे उसके दिव्यजन्म का ज्ञान होता हैं, और वह पश्चात्ताप दग्ध होकर चितापर चढनेको तैयार हो जाती हैं। इस तरह करुणरस से ओतप्रोत लोककथा ने कवि को 'सुवर्णा' काव्य को लिखनेके लिए बाध्य कर दिया।

इस प्रतिकात्मक कथाकाव्य के माध्यम से कवि ने यह स्पष्ट करनेका प्रयास किया हैं कि जिसतरह 'सुवर्णा महाभारत के नायक नायिका के समान दिव्य जन्मा नहीं हैं। उसकी स्थिति वैसी ही हैं जैसे आज हमारी मनीषा की। जिसतरह सुवर्णा के पिता दुर्योधन के सेनानायक कर्ण के द्वारा विजित और हत हुए यही हाल आज हमारी मनीषा के जन्मदाता और

पालक पोषक का आदर्श का हुआ हैं। इस कृतिमें कविने कल्पना एवं ऐतिहासिकता का अनूठा समन्वय करके प्रतिकात्मक रुप से कथावस्तु का सृजन किया हैं। कविने जिसप्रकार 'उत्तरजय' में अश्वत्थामाा के चरित्र को पहली बार नवीनता और विशदता प्रदान की थी उसीप्रकार सुवर्णा काव्य में भी कर्ण के चरित्र को नवीनता एवं भव्यता प्रदान की हैं। सचमुच सुवर्णा एक सफल खंडकाव्य हैं और उसमें खंडकाव्य के सभी तत्वों का निर्वाह भी हुआ हैं।

----सुवीरा----

'सुवर्णा' काव्य के दो वर्ष पश्चात सन् 1972 में नरेंद्र शर्मा की काव्यकृति 'सुवीरा' प्रकाशित हुई। द्रौपदी, उत्तरजय, सुवर्णा के सदृश्य 'सुवीरा' की कथा का आधार कवि ने महाभारत के उद्योगपर्व उपाख्यान को बनाया हैं। श्रीकृष्ण के समझाने पर भी दूर्योधन अपने आग्रहपर अटल रहा फलस्वरुप महाभारत का युध्द अटल हो जाता हैं। जब श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर छावनी की ओर लौटने लगें तब कुंती माता ने युधिष्ठिर को जो संदेश और आदेश दिया उसी के बारे में यह आख्यान हैं। वस्तुतः कवि ने महाभारत के उक्त आख्यान को अपने काव्य का आधार बनाकर अपने कथाकाव्य को प्रस्तुत किया हैं और 'सुवीरा' नाम उन्होंने कल्पना और अनुमान के सहारे उस नगरी को दिया हैं।

अपने पूर्ववर्ती कथाकाव्य की भाँति 'सुवीरा' भी कवि की लघुमात्र कलाकृति हैं और इस कथाकाव्य को कवि ने नौ अध्यायों में विभाजित किया हैं। कवि ने प्रतिकात्मक पध्दति का सहारा लेकर यह स्पष्ट किया है कि देशसे जैसे तीनों काल जूडें हैं वैसे ही वह किसी भी समय भौतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तरोंपर भी व्यापक रुप में विद्यमान रहता है। कथायोजना एवं चरित्रचित्रण की दृष्टिसे 'सुवीरा' निस्संदेह उल्लेखनीय कथाकाव्य हैं। मर्मस्पर्शी भावाभिव्यक्ती के साथ कविने सराहनीय कलागत विशिष्टताओंका निर्वाह किया हैं।

----कविश्री और आधुनिक कवि----

उपरनिर्दिष्ठ काव्यकृतियों के अलावा "कविश्री और आधुनिक कवि भाग 9" का भी उल्लेख किया जाता हैं लेकिन कविने इस संग्रह में संकलित कविताओं का चयन अपने काव्य कृतियों से ही किया हैं। अतः कई आलोचक नरेंद्रजीकी इस सग्रह को स्वतंत्र काव्यसग्रह मानने के लिए तैयार नहीं। साहित्य सदन चिरगॉव झॉसी से प्रकाशित इस संग्रहमें 113 कविताएँ संकलित की गयी हैं।

पं. नरेंद्र शर्मा के काव्य कृतित्व का सामान्य परिचय प्राप्त करने के उपरांत और उनके काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों को देखने के उपरांत हम उनकी काव्य चेतना को स्थूल रुप से तीन भागोंमें बाँट सकते हैं। अपने काव्यसंग्रह 'शूल फूल', 'कर्णफूल', 'प्रभातफेरी', तथा 'प्रवासी के गीत' में मुख्यतः प्रेम को स्थान दिया हैं। 'पलाशवन' में प्रकृति के रंगोंका अंकन किया हैं और 'हंसमाला' में कवि वैयक्तिक भावनाओं से सामाजिक चेतना की ओर अग्रसर हो चुका हैं। 'अग्निशस्य' की कविताओं द्वारा वह आध्यात्मिक जगत् की ओर आकृष्ट होता हैं और 'कदलीवन' में एक दार्शनिक की तरह ब्रम्ह, जीवन सृष्टि और माया आदि की व्याख्या करता हैं। 'द्रौपदी' तथा 'उत्तरजय' आदि पौराणिक विषयोंसे संबंधित खंडकाव्योंमें प्रतिकात्मक रुप में आधुनिक समस्याओं की व्याख्या की हैं। इसप्रकार शर्माजी की कविताओं तथा उनमें चित्रित समस्याओं को देखकर हम इतनाही कह सकते हैं कि श्री. नरेंद्र शर्मा मृत्यु के नही वरन् जीवन और जीवन की आसक्ति के कवि हैं। कवि का जीवन उसका काव्य होता हैं कविने अपने जीवन तथा जगत् में जो देखा तथा आंतरिक मनस्थितियों में जो जो अनुभव प्राप्त किया कवि ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुपमें अपनी कविता का आलंम्बन बनाया हैं। अतीत से वर्तमान को जोडने का पं. नरेंद्र शर्मा का यह प्रयास निस्संदेह सराहनीय हैं।

अगले अध्याय में हम पं. नरेंद्र शर्मा जी के खंडकाव्य 'द्रौपदी' तथा 'उत्तरजय' की स्थुल कथा तथा कवि द्वारा की गयी मौलिक उद्भावनाएँ को देखेंगे।

------------------*--------*

AJI UNIVERSITY

संदर्भ सूची

1) नरेंद्र शर्मा- आधुनिक कवि भाग 9 (अपनी बात से उध्दृत) पृ. 15 सं. 1976.

2) फूलचंद जैन 'सारंग' - कविश्री नरेंद्र शर्मा और उनका उत्तरजय - पृ. 15 सं. 1991.

3) नरेंद्र शर्मा - शूलफूल - (मिलन' कविता से उध्दृत) पृ. 14 सं. 1934.

4) नरेंद्र शर्मा- प्रभातफेरी ('कवि के प्रती' कविता से उध्दृत) पृ. 18 सं. 1939.

5) नरेंद्र शर्मा- प्रभातफेरी ('शैलकुमारी' कविता से उध्दृत) पृ. 118 सं. 1939.

6) नरेंद्र शर्मा- प्रवासी के गीत (भूमिका से उध्दृत) पृ. 6 सं 1939.

7) नरेंद्र शर्मा- पलाशवन ("फागुन की एक रात" कविता से उध्दृत) पृ. 67 सं. 1940.

8) नरेंद्र शर्मा- पलाशवनव ("साँझ होते ही न जाने छा गई कैसी उदासी"कविता से उध्दृत) पृ.21

9) नरेंद्र शर्मा- कामिनी पृ. 34 सं. 1953.

10) नरेंद्र शर्मा- 'मिट्टी और फूल कविता से उध्दृत) पृ.2 सं.2002 सवंत्

11) नरेंद्र शर्मा- रक्तचंदन ("नंगा फकीर" कविता से उध्दृत) पृ. 14 सं. 1948.

12) नरेंद्र शर्मा- कदलीवन ('कदलीवन' कविता से उध्दृत) पृ. 3 सं. 1954.

13) नरेंद्र शर्मा- द्रौपदी (प्रथम अध्याय) पृ.27 सं. 1986.

14) नरेंद्र शर्मा- द्रौपदी (पंचम अध्याय) पृ.70 सं.1986.

15) नरेंद्र शर्मा- उत्तरजय (सिध्दि) पृ. 54 सं. 1966.

-------*-------*-----